स्थानीय पर्यावरण पदचिह्नों का विश्लेषण करना

द हिन्दू

पेपर- III (पर्यावरण)

जलवायु परिवर्तन एक वैश्विक चिंता है, जल की कमी और वायु प्रदूषण जैसे मुद्दे अक्सर स्थानीय या क्षेत्रीय होते हैं। स्थ.नीय पर्यावरणीय मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करना महत्वपूर्ण है; और यहीं पर घरेलू पर्यावरणीय पदचिह्नों को समझने का भी महत्व है।

भारत में घरेलू पर्यावरण पदचिह्नों का वितरण:

एक हालिया अध्ययन में संपन्न व्यक्तियों के पर्यावरणीय प्रभाव पर प्रकाश डाला गया है, विशेषकर उन लोगों का जो बुनियादी जरूरतों से परे उपभोग में संलग्न हैं।

यह अध्ययन विशेष रूप से भारत में विभिन्न आर्थिक वर्गों के परिवारों के बीच विलासितापूर्ण उपभोग विकल्पों से जुड़े कॉर्बन डाई ऑक्साइड, जल और पार्टिकुलेट मैटर (PM2.5) के प्रभाव की जांच करता है।

विश्लेषण इन विलासिता उपभोग पदचिह्नों की तुलना गैर-विलासिता उपभोग से जुड़े लोगों से करता है। विलासिता उपभोग टोकरी में विभिन्न श्रेणियां शामिल है: जैसे बाहर भोजन करना, छुट्टियां, फर्नीचर, सामाजिक कार्यक्रम आदि।

मुख्य निष्कर्ष:

- अध्ययन से पता चलता है कि जैसे-जैसे परिवार गरीब से अमीर आर्थिक वर्ग की ओर बढ़ते हैं, सभी तीन पर्यावरणीय पदचिह्न बढ़ते हैं।
- विशेष रूप से, सबसे धनी 10% परिवारों के पदचिह्न, सम्पूर्ण जनसंख्या के समग्र औसत से लगभग दोगुने हैं।
- नौवें से 10वें दशमलव तक पदचिह्नों में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई है, नौवें दशमलव की तुलना में 10वें दशमलव में वायु प्रदूषण पदचिह्न में 68% की उच्चतम वृद्धि देखी गई है।
- इसके विपरीत, जल पदचिह्न में वृद्धि सबसे कम 39% है, जबकि ब्व2 उत्सर्जन 55% है।
- इससे पता चलता है कि भारतीय उपभोक्ता, विशेष रूप से शीर्ष दशमांश वाले, अभी भी 'टेक-ऑफ' चरण में हैं, केवल सबसे धनी वर्ग ही उपभोग-संबंधित पर्यावरणीय पदचिह्नों में पर्याप्त वृद्धि प्रदर्शित कर रहा है।

प्रमुख योगदानकर्ता:

- अध्ययन पर्यावरणीय फुटप्रिंट में वृद्धि के लिए बाहर खाने/रेस्तरां को एक महत्वपूर्ण योगदानकर्ता के रूप में पहचानता है। तीनों फुटप्रिंट में इन्हें विशेष रूप से शीर्ष उपभोग वाले 10% घरों में सबसे बड़ा योगदानकर्ता के रूप में जाना जाता है।
- इसके अतिरिक्त, फलों और मेवों की खपत को 10वें दशक में जल पदचिह्न में वृद्धि के कारक के रूप में उजागर किया गया है।
- व्यक्तिगत सामान, आभूषण और बाहर खाने-पीने जैसी विलासितापूर्ण उपभोग की वस्तुएं CO2 और वायु प्रदूषण के पदचिह्नों में वृद्धि में योगदान करती हैं।
- जबकि बायोमास से एलपीजी में संक्रमण से प्रत्यक्ष फुटप्रिंट कम हो जाते हैं, समृद्धि से जुड़े जीवनशैली विकल्पों के कारण PM2.5 फुटप्रिंट (और बाद में, CO2 फुटप्रिंट) में वृद्धि होती है।
- भारत में शीर्ष 10% का औसत प्रति व्यक्ति CO2 फुटप्रिंट, 6.7 टन प्रति व्यक्ति प्रति वर्ष है, जो 2010 के वैश्विक औसत 4.7 टन से अधिक है और पेरिस को प्राप्त करने के लिए आवश्यक 1.9 टन ब्व2म/बंच का वार्षिक औसत है। 1.5°C का समझौता लक्ष्य।

- हालांकि यह असमानता अभी भी अमेरिका या ब्रिटेन में औसत नागरिक के स्तर से नीचे है, लेकिन यह असमानता नीति निर्माताओं से तत्काल ध्यान देने की आवश्यकता को रेखांकित करती है।
- व्यापक सामाजिक आकांक्षाओं पर कुलीन जीवन शैली के प्रभाव को देखते हुए, नीति निर्माताओं को स्थिरता लक्ष्यों के अनुरूप समृद्ध परिवारों के उपभोग स्तर को नीचे की ओर लाने के प्रयासों को प्राथमिकता देनी चाहिए।

निष्कर्ष:

अध्ययन इस बात पर जोर देता है कि स्थिरता के प्रयास अक्सर वैश्विक जलवायु परिवर्तन पर ध्यान केंद्रित करते हैं, लेकिन वैश्विक पर्यावरणीय पदचिह्न आवश्यक रूप से स्थानीय और क्षेत्रीय पैमाने के पदचिह्नों के साथ संरेखित नहीं होते हैं।

हालाँकि, विलासिता की खपत से बढ़े हुए स्थानीय और क्षेत्रीय पर्यावरणीय मुद्दे हाशिए पर रहने वाले समुदायों को असंगत रूप से प्रभावित करते हैं।

उदाहरण के लिए, पानी की कमी और वायु प्रदूषण हाशिए पर रहने वाले समूहों पर असमान रूप से प्रभाव डालते हैं, उन्हें और अधिक हाशिए पर धकेल देते हैं, जबकि संपन्न वर्ग वातानुकूलित कारों और वायु शोधक जैसे सुरक्षात्मक उपायों का खर्च उठा सकते हैं। यह पर्यावरणीय न्याय संबंधी चिंताओं को दूर करने और समतापूर्ण स्थिरता प्रयासों को सुनिश्चित करने में बहु-फुटप्रिंट विश्लेषण के महत्व को रेखांकित करता है।

प्रारंभिक परीक्षा के संभावित प्रश्न (Prelims Expected Question)

प्रश्न: निम्नलिखित कथनों पर विचार करें-

1. बाहर रेस्तरां में खाने को पर्यावरणीय फुटप्रिंट में वृद्धि के लिए एक महत्वपूर्ण योगदानकर्ता के रूप में रेखांकित किया गया है।
2. भारत में शीर्ष 10% का औसत प्रति व्यक्ति ब्व्2 फुटप्रिंट, 6.7 टन प्रति व्यक्ति प्रति वर्ष है।

उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सत्य है/हैं?

(a) केवल 1 (b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1 न ही 2

Que. Consider the following statements-

1. Eating out in restaurants has been highlighted as a significant contributor to increased environmental footprint.
2. The average per capita CO2 footprint of the top 10% in India is 6.7 tonnes per capita per year.

Which of the above statements is/are correct?

(a) Only 1 (b) Only 2
(c) Both 1 and 2 (d) Neither 1 nor 2

उत्तर : C

मुख्य परीक्षा के संभावित प्रश्न व प्रारूप (Expected Question & Format)

प्रश्न: जलवायु परिवर्तन जैसे गंभीर और वैश्विक मुद्दे का हल स्थानीय पर्यावरणीय पदचिन्हों का विश्लेषण और उनके स्थानीय समाधान में है। चर्चा करें।

उत्तर का दृष्टिकोण :

- उत्तर के पहले भाग में जलवायु परिवर्तन की गंभीरता का विवरण संक्षेप में दें।
- दूसरे भाग में जलवायु परिवर्तन के समाधान के रूप स्थानीय पर्यावरणीय पदचिन्हों का विश्लेषण और संबंधित मौजूद आंकड़ों की चर्चा करें।
- अंत में अपने सुझाव देते हुए निष्कर्ष दें।

नोट : अभ्यास के लिए दिया गया मुख्य परीक्षा का प्रश्न आगामी UPSC मुख्य परीक्षा को ध्यान में रखकर बनाया गया है। अतः इस प्रश्न का उत्तर लिखने के लिए आप इस आलेख के साथ-साथ इस टॉपिक से संबंधित अन्य स्रोतों का भी सहयोग ले सकते हैं।